[This question paper contains 6 printed pages.]

5896 *आपका अनुक्रमांक* .....

B.A. (Prog.)/II **E**

HINDI DISCIPLINE—Paper II

हिंदी अनुशासन - प्रश्नपत्र II

(हिंदी गद्य विधाएँ, उपन्यास और हिंदी गद्य साहित्य का इतिहास)

(प्रवेश वर्ष 2004/2006 और तत्पश्चात् नियमित कॉलेजों के विद्यार्थियों के लिए/NCWEB के विद्यार्थियों के लिये)

समय : 3 घण्टे *पूर्णांक : 75*

(इस प्रश्न - पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

टिप्पणी : प्रश्न - पत्र पर अंकित पूर्णांक नियमित कॉलेजों श्रेणी 'A') के विद्यार्थियों के लिए अनुप्रयोज्य हैं। तथापि ये अंक NCWEB के विद्यार्थियों के संबंध में उनके परिणाम के संकलन के लिए नियुक्त अधिनिर्णय के समय पर, उनके आनुपातिक रूप में अधिक होंगे।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए

(क) करुणा की प्राप्ति के लिए पात्र में दुख के अतिरिक्त और किसी विशेषता की अपेक्षा नहीं। पर आनन्दित हम ऐसे ही आदमी के सुख को देखकर होते हैं जो या तो हमारा सुहृद् या

P.T.O.

सम्बन्धी हो अथवा अत्यन्त सज्जन, शीलवान या चरित्रवान होने के कारण समाज का मित्र या हितकारी हो। यों ही किसी अज्ञात व्यक्ति का लाभ या कल्याण सुनने से हमारे हृदय में किसी प्रकार के आनन्द का उदय नहीं होता। इससे प्रकट है कि दूसरों के दुख से दुखी होने का नियम बहुत व्यापक है और दूसरों के सुख से सुखी होने का नियम उसकी अपेक्षा परिमित है।

अथवा

हड्डी-हड्डी से लड़ने वाले यह योद्धा जीवन की महान शक्ति को अभी तक अपने जीवित रख सके हैं। संसार कहता है, स्टालिनग्राड में लोग खंडहरों में से लड़े थे और उन्होंने दुश्मन के दाँत खट्टे कर दिए। उन्होंने बर्बरता की धारा को रोककर रूस को गुलाम होने से बचा दिया। किन्तु मैं पूछता हूँ, क्या शिद्धिरगंज दूसरा स्टालिनग्राड नहीं है? मनुष्य भूख से तड़प-तड़पकर यहाँ जान दे चुके हैं, वे भीषण रोगों का शिकार हो चुके हैं, उनके घर खंडहर हो गए हैं, कब्रों से जमीन ढँक गई है, नदियों में लाशों की सड़ाँध एक दिन दूर-दूर तक फैल गई थी, किन्तु मनुष्य का साहस जीवित है।

(ख) इस अभाव और इसी पीड़ा में उन्होंने अपने अंदर एक बड़ा सुकुमार मातृ-हृदय विकसित किया है। मातृ-हृदय की परिभाषा ही शायद यह होगी, जो किसी के भी दुख-कष्ट में सहज भाव से विगलित हो सके। प्रेम निश्चत प्रतिदान चाहता है, करुणा केवल देना जानती है। प्रेमी से करुणाशील को मैं अधिक विकसित व्यक्ति मानता हूँ। मैं जिस मनःस्थिति में था, उसमें मुझे प्रेम नहीं, करुणा की आवश्यकता थी। उनकी करुणा मेरी ओर,

मुझे, जांच-परख कर नहीं, मेरा विश्लेषण-अध्ययन कर नहीं, सहज प्रवाहित हुई थी।

अथवा

वह समस्या तो कभी की हल हो गई, मुनिवर! नर्क में पिछले सालों में बड़े गुणी कारीगर आ गए हैं। कई इमारतों के ठेकेदार हैं, जिन्होंने पूरे पैसे लेकर रद्दी इमारतें बनाईं। बड़े-बड़े इंजीनियर भी आ गए हैं, जिन्होंने ठेकेदारों से मिलकर भारत की पंचवर्षीय योजनाओं का पैसा खाया। ओवरसीयर हैं, जिन्होंने उन मज़दूरों की हाज़िरी भर कर पैसा हड़पा, जो कभी काम पर गए ही नहीं। इन्होंने बहुत जल्दी नर्क में कई इमारतें तान दी हैं।

(8,8=16)

2. (क) किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

(i) मज़दरी और प्रेम परस्पर अन्योन्याश्रित किस प्रकार हैं?

(ii) मानवीय मूल्यों मे करुणा का क्या स्थान है।

(iii) 'भारतीय संस्कृति को समझने के लिए शास्त्र की अपेक्षा लोकमन को समझना आवश्यक है-इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

(iv) बंगाल के अकाल का वर्णन कीजिए।

(v) 'भोलाराम का जीव' में निहित व्यंग्य पर प्रकाश डालिए।

(vi) बुधिया का चरित्र-चित्रण कीजिए।

(vii) 'ठाकुर का कुँआ' के आधार पर भारतीय समाज में जाति-व्यवस्था के स्वरूप पर प्रकाश डालिए।

(viii) 'वापसी' कहानी में सेवा-निवृत्ति के बाद के जीवन की त्रासदी को किस प्रकार स्पष्ट किया गया है?

(4×4=16)

(ख) किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(i) असुर, दानव, दैत्य कौन थे?

(ii) बंगाल का अकाल कब पड़ा था?

(iii) 'भोलाराम का जीव' यमलोक क्यों नहीं पहुँचा?

(iv) मायके में बिविया के प्रति लोगों का व्यवहार कैसा था?

(v) बेला और इन्दु का क्या सम्बन्ध है?

(vi) शकलदीप बाबू के लिए डिप्टी कलक्टरी का क्या महत्त्व है?

(vii) 'वापसी' कहानी में वापसी से क्या तात्पर्य है?(1×3=3)

3. किसी **एक** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए:

(क) साथ रहने की यन्त्रणा भी बड़ी विकट थी और अलगाव का त्रास भी। अलग रहकर भी वह ठंडा युद्ध कुछ समय तक जारी ही नहीं रहा बल्कि अनजाने ही जीत की सम्भावनाओं को एक नया सम्बल मिल गया था कि अलग रहकर ही शायद सही तरीके से महसूस होगा कि सामने वाले को खोकर क्या कुछ अमूल्य खो दिया है। (आपका बंटी)

अथवा

"जो होना था सो तो हो ही गया, और चलो अच्छा ही हुआ। सारी जिन्दगी उस तनाव में काटने की अपेक्षा तो उससे मुक्त होना लाख गुना अच्छा था। वह कानूनी कार्यवाही हो जाएगी सो भी अच्छा ही रहेगा। यह संबंध ही ऐसा है कि लाख लड़-भिड़ लो, अलग रहने लगो, पर कहीं न कहीं आशा का एक तन्तु जुड़ा ही रह जाता है। वह आशा चाहे जिन्दगी भर पूरी न हो . . . होती भी नहीं है. . . फिर भी मन है कि इधर-उधर नहीं जाता, बस उसी में अटका रह जाता।"

(आपका बंटी)

(ख) वकील साहब को रतन से पति का-सा प्रेम नहीं, पिता का-सा स्नेह था। जैसे कोई स्नेही पिता मेले में लड़कों से पूछ-पूछकर खिलौने लेता है, वह भी रतन से पूछ-पूछकर खिलौने लेते थे, उसके कहने की देर थी। उनके पास उसे प्रसन्न करने के लिए धन के सिवाय और चीज़ ही क्या थी? उन्हें अपने जीवन में एक आधार की ज़रूरत थी - सदेह आधार की, जिसके सहारे वह इस जीर्ण दशा में जीवन-संग्राम में खड़े रह सकें, जैसे किसी उपासक को प्रतिमा की जरूरत होती है। (गबन)

अथवा

अगर इस समय किसी को संसार में सबसे दुःखी, जीवन से निराशा, चिन्ताग्नि में जलते हुए प्राणी की मूर्ति देखनी हो, तो उस युवक को देखें, जो साइकिल पर बैठा हुआ अलफ्रेड पार्क के सामने से चला जा रहा है। इस वक्त अगर काला साँप नज़र आये, तो वह दोनों हाथ फैलाकर उसका स्वागत करेगा और उसके विष को सुधा की तरह पियेगा। मौत ही अब उसकी चिन्ताओं का

अन्त कर सकती है। लेकिन क्या मौत उसे बदनामी से बचा सकती है? कुल में कलंक लगाकर मरने के बाद भी अपनी हँसी कराके चिन्ताओं से मुक्त हुआ हो क्या, लेकिन दूसरा उपाय ही क्या? (गबन) (8)

4. किसी एक प्रश्न का उत्तर दीजिए:

(i) 'गबन' उपन्यास की नायिका का चरित्र-चित्रण कीजिए।

(ii) 'गबन' उपन्यास में भारतीय समाज की किन-किन समस्याओं को उभारा गया है?

(iii) शकुन का चरित्र-चित्रण कीजिए।

(iv) पारिवारिक विघन के बाद बालमन पर पड़ने वाले प्रभाव को 'आपका बंटी' में किस प्रकार चित्रित किया गया है? (12)

5. उपन्यास अथवा संस्मरण का विकासात्मक परिचय दीजिए। (10)

6. कहानी अथवा रेखाचित्र की विकास-यात्रा पर प्रकाश डालिए। (10)